Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

AFMA–106

M.A. (Final) Examination, 2023

HINDI

Paper - IV **(ग)**

(तुलसीदास)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) भारतीय समाज में रामचरित मानस का क्या स्थान है। बताइए।

   (ii) रामचरित मानस की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।

(iii) विनय पत्रिका की समन्वय भावना पर प्रकाश डालिए।

(iv) विनयपत्रिका ग्रन्थ लिखने का क्या कारण था ?

(v) कवितावली के सन्देश को अपने शब्दों में लिखिए।

(vi) कवितावली के वस्तु विधान पर प्रकाश डालिए।

(vii) गीतावली का वस्तु-विभाजन किस प्रकार किया गया है ?

(viii) गीतावली के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(ix) तुलसी के समाज-सुधारक रूप का परिचय दीजिए।

(x) तुलसीदास के दृष्टिकोण का आधार बताइए।

खण्ड–ब

2. पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं॥

बरु तीर मारहुं लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारु उतारि हौं।

3. राम राम-राम जीह जौलौं तू न जपिहै

तौलौं तू कहूँ जाय तिहुँ ताप तपिहै॥

सुरसरि-तीर बिनु नीर दु:ख पाइहै।

सुरतरु तरे तोहि दारिद सताइहै॥

जागत-बागत, सपने न सुख सोइहै।

जनम-जनम, जुग जुग जुग रोइहै॥

छूटिबेके जतन बिसेष बाँधो जायगो।

ह्वै है बिष भोजन जो सुधा-सानि खायगो।

4. मन पछितैहै अवसर बीते

दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु, करम वचन अरु ही ते॥

सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न काल बलीते।

हम-हम करि धन-धाम सँवारे, अन्त चले उठ रीते॥

सुत-बनितादि जानि स्वारथरत, न करु नेह सबही ते।

अंतहु तोहिं तजैंगे पामर। तू न तजै अबहीं ते॥

अब नाथहिं अनुरागु, जाग जड़, त्याग दुरासा जी ते।

बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ, विषय-भोग बहु घी ते॥

5. राजा-रंक, रागी औ बिगरी, भूरिभागी ये

अभागी जीव जरत, प्रभाउ कलि बामको॥

तुलसी! कबंध कैसो धाइबो बिचारु अंध।

धंध देखियत जग, सोचु परिनाम को॥

सोइबो जो रामके सनेहकी समाधि-सुखु।

जागिबो जो जीह जपै नीके रामनाम को॥

6. सेवा अनुरूप फल देत भूप कूप ज्यों,

बिहूने गुन पथिक पिआसे जात पथ के।

लेखे-जोखै चित तुलसी स्वारथ हित,

नीके देखे देवता देवैया घने गथके॥

गीधु मानो गुरु कपि-भालु माने मीत कै;

पुनीत गीत साके सब साहेब समत्थके।

और भूप पररिव सुलारिव तौलि ताइ लेत,

लसमके खसमु तुहीं पै दसरत्थके।

7. कनक कलस, चामर-पताक धुज, जहँ-तहँ बन्दनवार नाए।

भरहिं अबीर, अरगजा छिरकाहिं, सकल लोक एक रंग रए॥

उमगि चल्यौ आनंद लोक तिहुँ, देत सबनि मंदिर रितए।

तुलसीदास पुनि भरेई देखियत, रामकृपा चितवनि चितए॥

8. सौहैं साँवरे पथिक, पाछै ललना लोनी।

दामिनी-वरन गोरी, लखि सखि तृन तोरी,

बीती है वय किसोरी, जोवन होनी॥

नीकै कै निकाई देखि, जनम सफल लेखि,

हम-सी भूर-भागिनी नभ न छोनी।

तुलसी स्वामी-स्वामिनी जोहे मोही हैं भामिनी,

सोमा-सुधा पिए करि अंखिया दोनी॥

खण्ड-स

9. रामचरित मानस के काव्य सौन्दर्य पर निबन्ध लिखिए।

10. ''विनयपत्रिका भक्तों के कण्ठों का हार है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

11. कवितावली के उत्तरकाण्ड का सार बताते हुए कवितावली के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

12. तुलसीदास के आध्यात्मिक दर्शन पर लेख लिखिए।